شهيد

الشهيد محمد نعيم الرحمن

تاريخ الميلاد: 1 يناير, 2003
تاريخ الاستشهاد: 19 يوليو, 2024
المحافظة: دكا سيتي
المنطقة: ماداريبور

نبذة موجزة عن الشهيد

المهنة: طالب

مكان الاستشهاد: شاهزادبور، شمال بادّا

تفاصيل الاستشهاد والوقائع

("بعد إزالة ٨-١٠ جثث اكتشفت أن جثته كانت ملقاة على أرضية غرفة الجثث،

تمكنت أم نعيم الرحمن من التعرف على جثته!)

نبذة مختصرة عن الشهيد:

لقد عاش وطننا لفترة طويلة في الفوضى والظلم والفساد. و الحمد لله أننا تحررنا مي قيد هذا الظلم والاستبداد في الخامس من أغسطس الماضي، فعلينا أن نشكر الله سبحانه وتعالى. لن ننسى أبداً فضلَ و إسهامات جميع هؤلاء الذين فقدوا حياتهم من أجل تحريرنا من هذا الظلم. و بفضل شجاعة هؤلاء الشباب الأبطال مثل الشهيد محمد نعيم الرحمن ، نستطيع اليوم أن نعيش في بنجلاديش بحرية تامة. لقد شارك آلاف الشباب مثل نعيم الرحمن في قمع الظلم و وإزالة العنصرية والتمييز من هذا البلد بدمائهم الطاهرة من خلال الإطاحة بالطغاة.

لقد عانى الشعب البنغالي معاناة شدية من هذا الظلم والاضطهاد والتمييز منذ فترة طويلة. وأخيراً كسرت قوى انتهاكات القهر والتمييز بنضال واحتجاج الطلاب والشعب البنغالي، كما حدث في حركة اللغة عام ١٩٥٢م أن الشعب تعهدوا بالنضال للحصول على حقوقهم. وأخيراً في الخامس من أغسطس عام ٢٠٢٤م أُجبِر رئيسُ الوزراء و حزب عَوَامِيلِيغ على الاستقالة. وهكذا كُتبت مرة أخرى في تاريخ بنجلاديش اسم الحرية.

مقدمة أولية:

نعيم الرحمن وُلد في داكا، وإن كان منزل والديه في مَادَارِيبُور. في أول يوم من العام ٢٠٠٣م أي في ١ يناير، أتى نعيم الرحمن إلى العالم ليجعل والديه فرحين به. نعيم الرحمن كان متميزاً بسلوكه الحسن، و ونظرات عينيه وتصرفاته كانت تدل على صدقه، وكان هدفه الوحيد هو الطاعة لله سبحانه وتعالى. و كان يسعى دائمًا لكسب رضا والديه من أجل رضا الله.

كان يوقِّر والدَه وكان محبًا لوالدته. منذ صغره كان نعيم الرحمن ذي موهبة. حصل على العديد من الجوائز المرموقة في المدرسة الابتدائية والمدرسة الثانوية بالإضافة إلى الدراسة في الكلية، وكان يعمل بدوام جزئي في مطعمٍ بمنطقة تَيجْغَاون. وبدأ يساعد والده في دعم الأسرة، فكان يسدد مصاريف دراسته من كسبه. وكان أمله أن يعمل في أحد البنوك الحكومية الكبرى، فالتحق بكلية غُولْشَان التجارية بتخصص جيد.

لكن على الرغم من قيمة تخصصه وقيمة كليته التي يدرس فيها لم يكن هناك فائدة في عهد الطغاة حكومة شيخة حسينة. لأن توزيع الوظائف من خلال الحصص الخاصة والعنصرية لم تكن في متناول الطلاب عموماً من أجل دحض هذه المؤامرة وقمعها شارك نعيم الرحمن في حركة الطلاب المناهضة للتمييز. وفي النهاية انتهت مؤامرة العصابة الإرهابية من حزب العَوَامِيلِيغ. و أنهى نعيم الرحمن رحلته في الدنيا أيضًا.

تفاصيل استشهاده:

لم يلق بالًا ولم يعبأ بمئات الاعتراضات من والدته، فشارك الطالب المتفوق محمد نعيم الرحمن من كلية غُولْشَان التجارية في حركة الطلاب المناهضة للتميز. وكان يقول لوالدته كل يوم عندما يخرج من المنزل بأن الحكومة الطاغية ستسقط حتمًا. وقد حدث هذا السقوط لكنه لم يستطع رؤية ذلك لأنه ضحى بحياته الغالية. و في المشرحة بالمستشفى تمكنت والدة نعيم الرحمن من العثور على جثته بين ثمانية إلى عشرة جثث. لم يستطع الأقارب وسكان المنطقة تقبل هذه الوفاة.

قال الأقارب إنه في ١٩ يوليو بعد الظهر أُجريت مكالمة من هاتف نعيم الرحمن إلى هاتف والده محمد خليل الرحمن. ومن تلك المكالمة علموا أن جثة نعيم الرحمن التي أُصيبت برصاص تم العثور عليها في مستشفى إيه إم زَد في شمال بادًّا بالعاصمة.

كان نعيم الرحمن طالبًا في السنة الأولى من كلية غُولْشَان التجارية. و هو الابن الأكبر لمحمد خليل الرحمن المقيم في حي كَالَا تَادْبُور غرب، والذي يعمل سائق سيارة خاصة. يعيش خليل الرحمن مع أسرته في شقة صغيرة مكونة من غرفتي نوم في الطابق الثاني من المبنى. قال: إن راتبه ٢٢٠٠٠ تاكا، وكان نعيم الرحمن هو دعم مشارك لحياته ولأسرته. وكان يأمل أن يتولى نعيم الرحمن شؤون الأسرة بعد إنهاء دراسته. قال: إن نعيم الرحمن كان نشطًا منذ البداية في حركة الطلاب المناهضة للتمييز. في ١٩ يوليو قُتل برصاص الشرطة في الشارع الرئيسي المجاور لسوق شمال بَادًّا في العاصمة؛ لأنه أصيب برصاصة في قلبه. فنزف بغزارة من فمه. وتوفي في مكان الحادث. وكانت إصابته برصاصة في الساعة ٤:٣٠ مساءً في ١٩ يوليو.

قال خليل الرحمن: "تلقيت مكالمة من هاتف ابني سألني عن علاقة بيني وبين نعيم الرحمن ؟ قلت: "ابني." قال: إن ابنك قد أصيب برصاصة تعال إلى مستشفى . فانطلقت مع ابنيين وزوجتي وابن شقيقي إلى المستشفى مسرعين.

تجاوزنا الشارع بغاية الخطر وأخيرًا وصلنا إلى المستشفى لاستلام الجثة؛ حيث كانت الجثة في ثلاجة الموتى بين سبع إلى عشر جثث. وفور تعرف والدته على جثة نعيم الرحمن فقدت الوعي مباشرة.

قالت: "كان موظفو المستشفى يقولون: "الوضع سيء هنا للغاية، لا يمكننا إبقاء الجثث لفترة طويلة، فعليكم اتخاذ التدابير اللازمة والترتيبات العاجلة لاستلام الجثة."

فطلبنا سيارة الإسعاف من المستشفى ولكنهم لم يوافقوا على ذلك، فقررنا الذهاب بالجثة على عربة رِكْشَة واضعين على أيدينا. وأثناء المغادرة من المستشفى فوجئنا بتبادل اطلاق نار في منطقة نُوتُون بَازَار قرب جسر شركة كُوكَاكُولَا، احتجزت الشرطة ركشة ابني الصغير مَيبُور الرحمن وابن شقيقي وأخرجتهم منها. فبدأ ابني الصغير بالبكاء بشدة و عمره ٨ سنوات فقط.

ثم عبرنا بَارِيدَارَى ولكن عندما وصلنا إلى زاوية شركة كوكا كولا مع جثة ابننا، سمحت لنا الطلاب المحتجين بعبور الشارع. و كانت الساعة السادسة والربع. وحينها كانت المعارك مشتعلة في المنطقة. و كانت جثة نعيم الرحمن على قدم ابني الأوسط.

في منطقة نَدَّى، هاجم إرهابيو حزب الرابطة(عَوَامِلِيغ) يدي ابني سَيمُ الرحمن بقوة. و عدنا مع الجثة إلى منزل كَالَا تَدبُور بتعب شديد. ثم أقمنا صلاة الجنازة ودفنّا في قرية.

قال خليل الرحمن: "أنا مستعد لرفع دعوى قضائية و جنائية بواسطة محامي و المتهم الأول سيكون شيخة حسينة، والوزير السابق عُبيد القادر، ووزير الداخلية السابق، ورؤساء الشرطة السابقين، والعديد من ضباط الشرطة، وإني أطالب بالعدالة لقتل ابني".

مشاعر المقربين للشهيد:

يقول صديق الشهيد إنه كان إنسانًا لطيفًا ومتواضعًا ومؤدبًا. كان يُصلي بانتظام. وكان شخصية معطاء و ودودة.

الشهيد محمد نعيم الرحمن في سطور
الاسم الكامل : محمد نعيم الرحمن
اسم أب الشهيد: محمد خليل الرحمن
اسم أم الشهيد: نَاسِمَة خَاتُوْنْ
تاريخ الميلاد : ١ يوليو ٢٠٠٣م
العنوان الدائم : مُونْشِي كَانْدِي، بانْدَارِيَة، شِيبْثَار،مَادَارِيبُور

العنوان الحالي : عمارة كَـ٧٥/٢، كَالَاتَادْبُور، غُولْشَان، داكا

المهنة : طالب في كلية تجارة غُولْشَان

تفصيل عن أفراد الأسرة

الأشقاء: ١. سَيَمُ الرحمن (عمره ١٨)

٢.مَيبُ الرحمن (٨)

مكان الإصابة : شَاه جَادْبُور

تاريخ الإصابة والإستشهاد : ١٩ يوليو ٢٠٢٤، الساعة ٤:٣٠ عصرا

قاتل : ثَاتْرَالِيغ، جُبُلِيغ، عَوَامِيلِيغ و شرطة

المقبرة : مقبرة خُجْبُور مَاتِر بَازَار، مَادَارِبُور.

آية قرآنية

ولا تقولوا لمن يقتل في سبيل الله أموات بل أحياء ولكن لا تشعرون (البقرة ٢:١٥٤)

الحديث الشريف

للشهيد سبعون شفاعة لأقاربه في الجنة. (سنن أبي داود ٢٥٢٠)

عدد الدعوات: 0

معرض الصور التذكارية للشهيد

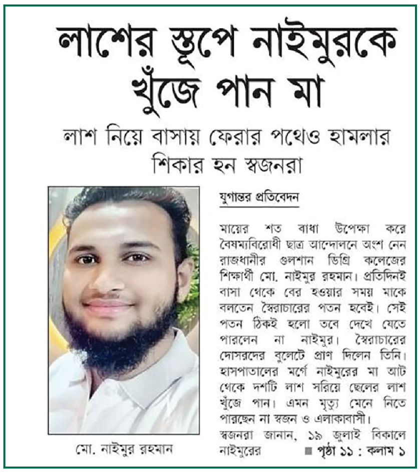

লাশের স্তূপে নাইমুরকে খুঁজে পান মা

লাশ নিয়ে বাসায় ফেরার পথেও হামলার শিকার হন স্বজনরা

মো. নাইমুর রহমান

যুগান্তর প্রতিবেদন

মায়ের শত বাধা উপেক্ষা করে বৈষম্যবিরোধী ছাত্র আন্দোলনে অংশ নেন রাজধানীর গুলশান ডিগ্রি কলেজের শিক্ষার্থী মো. নাইমুর রহমান। প্রতিদিনই বাসা থেকে বের হওয়ার সময় মাকে বলতেন স্বৈরাচারের পতন হবেই। সেই পতন ঠিকই হলো তবে দেখে যেতে পারলেন না নাইমুর। স্বৈরাচারের দোসরদের বুলেটে প্রাণ দিলেন তিনি। হাসপাতালের মর্গে নাইমুরের মা আট থেকে দশটি লাশ সরিয়ে ছেলের লাশ খুঁজে পান। এমন মৃত্যু মেনে নিতে পারছেন না স্বজন ও এলাকাবাসী।

স্বজনরা জানান, ১৯ জুলাই বিকালে নাইমুরের ■ পৃষ্ঠা ১১ : কলাম ১

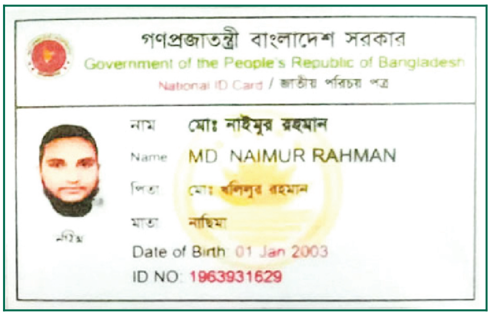

গণপ্রজাতন্ত্রী বাংলাদেশ সরকার
Government of the People's Republic of Bangladesh
National ID Card / জাতীয় পরিচয় পত্র

নাম মোঃ নাইমুর রহমান
Name MD NAIMUR RAHMAN
পিতা মোঃ খলিলুর রহমান
মাতা নাছিমা
Date of Birth 01 Jan 2003
ID NO: 1963931629

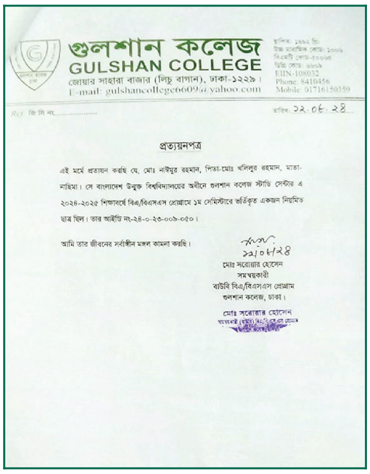

গুলশান কলেজ
GULSHAN COLLEGE
জোয়ার সাহারা বাজার (লিচু বাগান), ঢাকা-১২২৯।
E-mail: gulshancollege6609@yahoo.com

স্থাপিত: ১৯৯২ খ্রি:
EIIN-108032
Phone: 8410456
Mobile: 01716150359

Ref: জি সি নং.................. তারিখ: 22.06.24

প্রত্যয়নপত্র

এই মর্মে প্রত্যয়ন করছি যে, মোঃ নাঈমুর রহমান, পিতা-মোঃ খলিলুর রহমান, মাতা-নাছিমা। সে বাংলাদেশ উন্মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়ের অধীনে গুলশান কলেজ স্টাডি সেন্টার এ ২০২৪-২০২৫ শিক্ষাবর্ষে বিএ/বিএসএস প্রোগ্রামে ১ম সেমিস্টারে ভর্তিকৃত একজন নিয়মিত ছাত্র ছিল। তার আইডি নং-২৪-০-২৩-০০৯-০৫০।

আমি তার জীবনের সর্বাঙ্গীন মঙ্গল কামনা করছি।

22/06/24
মোঃ সরোয়ার হোসেন
সমন্বয়কারী
বাউবি বিএ/বিএসএস প্রোগ্রাম
গুলশান কলেজ, ঢাকা।

মোঃ সরোয়ার হোসেন

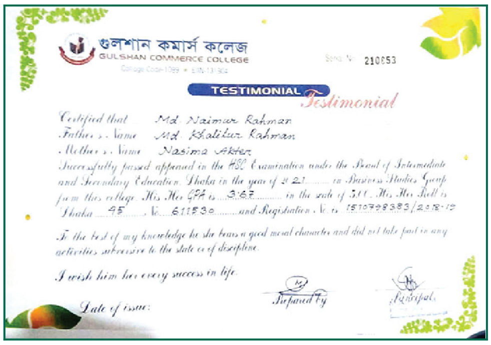

গুলশান কমার্স কলেজ
GULSHAN COMMERCE COLLEGE
College Code-1099 • EIIN-131904

Serial No 210053

TESTIMONIAL
Testimonial

Certified that Md. Naimur Rahman
Father's Name Md. Khalilur Rahman
Mother's Name Nasima Akter
Successfully passed appeared in the HSC Examination under the Board of Intermediate and Secondary Education, Dhaka in the year of 2021 in Business Studies Group from this college. His/Her GPA is 3.67 in the scale of 5.00. His/Her Roll is Dhaka 45 No. 611530 and Registration No. is 1510798383/2018-19

To the best of my knowledge he/she bears a good moral character and did not take part in any activities subversive to the state or of discipline.

I wish him/her every success in life.

Date of issue:

Prepared by

Principal

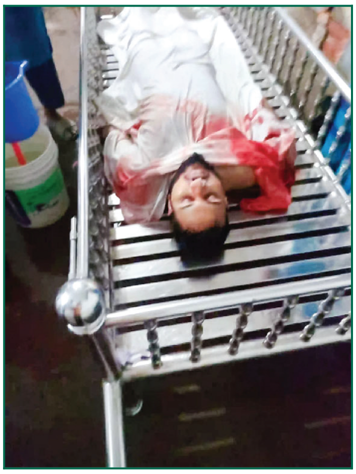

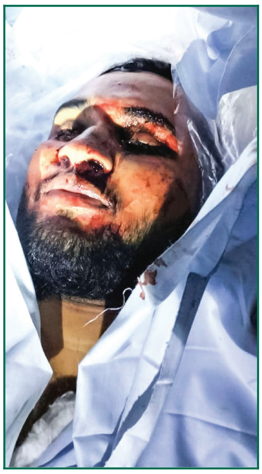

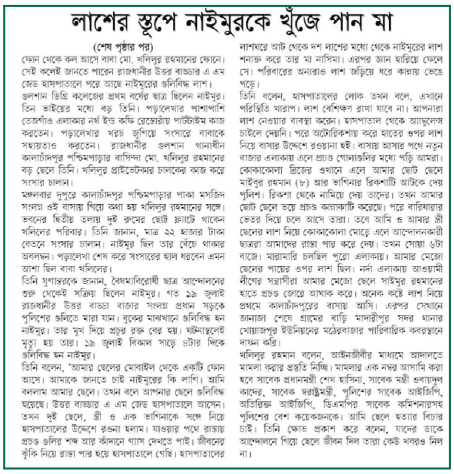

লাশের স্তূপে নাইমুরকে খুঁজে পান মা

(শেষ পৃষ্ঠার পর)

ফোন থেকে কল আসে বাবা মো. খলিলুর রহমানের ফোনে। সেই কলেই জানতে পারেন রাজধানীর উত্তর বাড্ডার এ এম জেড হাসপাতালে পরে আছে নাইমুরের গুলিবিদ্ধ লাশ।

গুলশান ডিগ্রি কলেজের প্রথম বর্ষের ছাত্র ছিলেন নাইমুর। তিন ভাইয়ের মধ্যে বড় তিনি। পড়ালেখার পাশাপাশি তেজগাঁও এলাকার নর্থ ইন্ড কফি রেস্তোরাঁয় পার্টটাইম কাজ করতেন। পড়ালেখার খরচ জুগিয়ে সংসারে বাবাকে সহায়তাও করতেন। রাজধানীর গুলশান থানাধীন কালাচাঁদপুর পশ্চিমপাড়ার বাসিন্দা মো. খলিলুর রহমানের বড় ছেলে তিনি। খলিলুর প্রাইভেটকার চালকের কাজ করে সংসার চালান।

মঙ্গলবার দুপুরে কালাচাঁদপুর পশ্চিমপাড়ার পাকা মসজিদ সংলগ্ন ওই বাসায় গিয়ে কথা হয় খলিলুর রহমানের সঙ্গে। ভবনের দ্বিতীয় তলায় দুই রুমের ছোট্ট ফ্ল্যাটে থাকেন খলিলের পরিবার। তিনি জানান, মাত্র ২২ হাজার টাকা বেতনে সংসার চালান। নাইমুর ছিল তার বেঁচে থাকার অবলম্বন। পড়ালেখা শেষ করে সংসারের হাল ধরবেন এমন আশা ছিল বাবা খলিলের।

তিনি যুগান্তরকে জানান, বৈষম্যবিরোধী ছাত্র আন্দোলনের শুরু থেকেই সক্রিয় ছিলেন নাইমুর। গত ১৯ জুলাই রাজধানীর উত্তর বাড্ডা বাজার সংলগ্ন প্রধান সড়কে পুলিশের গুলিতে মারা যান। বুকের মাঝখানে গুলিবিদ্ধ হন নাইমুর। তার মুখ দিয়ে প্রচুর রক্ত বের হয়। ঘটনাস্থলেই মৃত্যু হয় তার। ১৯ জুলাই বিকাল সাড়ে ৪টার দিকে গুলিবিদ্ধ হন নাইমুর।

তিনি বলেন, 'আমার ছেলের মোবাইল থেকে একটি ফোন আসে। আমাকে জানতে চাই নাইমুরের কি লাগি। আমি বললাম আমার ছেলে। তখন বলে আপনার ছেলে গুলিবিদ্ধ হয়েছে। উত্তর বাড্ডার এ এম জেড হাসপাতালে আসেন। তখন দুই ছেলে, স্ত্রী ও এক ভাগিনাকে সঙ্গে নিয়ে হাসপাতালের উদ্দেশে রওনা হলাম। যাওয়ার পথে রাস্তায় প্রচণ্ড গুলির শব্দ আর কাঁদানে গ্যাস দেখতে পাই। জীবনের ঝুঁকি নিয়ে রাস্তা পার হয়ে হাসপাতালে গেছি। হাসপাতালের লাশঘরে আট থেকে দশ লাশের মধ্যে থেকে নাইমুরের লাশ শনাক্ত করে তার মা নাসিমা। এরপর জ্ঞান হারিয়ে ফেলে সে। পরিবারের অন্যরাও লাশ জড়িয়ে ধরে কান্নায় ভেঙে পড়ে।

তিনি বলেন, হাসপাতালের লোক তখন বলে, এখানে পরিস্থিতি খারাপ। লাশ বেশিক্ষণ রাখা যাবে না। আপনারা লাশ নেওয়ার ব্যবস্থা করেন। হাসপাতাল থেকে অ্যাম্বুলেন্স চাইলে দেয়নি। পরে অটোরিকশায় করে হাতের ওপর লাশ নিয়ে বাসার উদ্দেশে রওয়ানা হই। বাসায় আসার পথে নতুন বাজার এলাকায় এলে প্রচণ্ড গোলাগুলির মধ্যে পড়ি আমরা। কোকাকোলা ব্রিজের ওখানে এলে আমার ছোট ছেলে মাইবুর রহমান (৮) আর ভাগিনার রিকশাটি আটকে দেয় পুলিশ। রিকশা থেকে নামিয়ে দেয় তাদের। তখন আমার ছোট ছেলে ভয়ে প্রচণ্ড কান্নাকাটি করেছে। পরে বারিধারার ভেতর দিয়ে চলে আসে তারা। তবে আমি ও আমার স্ত্রী ছেলের লাশ নিয়ে কোকাকোলা মোড়ে এলে আন্দোলনকারী ছাত্ররা আমাদের রাস্তা পার করে দেয়। তখন সোয়া ৬টা বাজে। মারামারি চলছিল পুরো এলাকায়। আমার মেজো ছেলের পায়ের ওপর লাশ ছিল। নর্দা এলাকায় আওয়ামী লীগের সন্ত্রাসীরা আমার মেজো ছেলে সাইমুর রহমানের হাতে প্রচণ্ড জোরে আঘাত করে। অনেক কষ্টে লাশ নিয়ে প্রথমে কালাচাঁদপুরের বাসায় আসি। এরপর সেখানে জানাজা শেষে গ্রামের বাড়ি মাদারীপুর সদর থানার খোয়াজপুর ইউনিয়নের মঠেরবাজার পারিবারিক কবরস্থানে দাফন করি।

খলিলুর রহমান বলেন, আইনজীবীর মাধ্যমে আদালতে মামলা করার প্রস্তুতি নিচ্ছি। মামলার এক নম্বর আসামি করা হবে সাবেক প্রধানমন্ত্রী শেখ হাসিনা, সাবেক মন্ত্রী ওবায়দুল কাদের, সাবেক স্বরাষ্ট্রমন্ত্রী, পুলিশের সাবেক আইজিপি, অতিরিক্ত আইজিপি, ডিএমপির সাবেক কমিশনারসহ পুলিশের বেশ কয়েকজনকে। আমি ছেলে হত্যার বিচার চাই। তিনি ক্ষোভ প্রকাশ করে বলেন, যাদের ডাকে আন্দোলনে গিয়ে ছেলে জীবন দিল তারা কেউ খবরও নিল না।

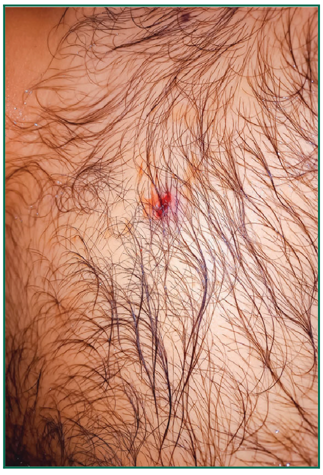

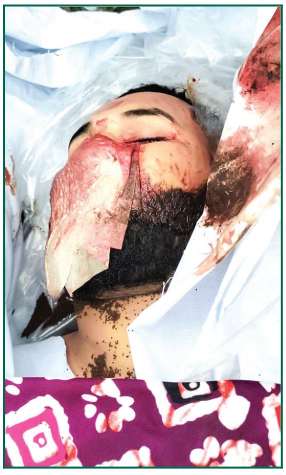

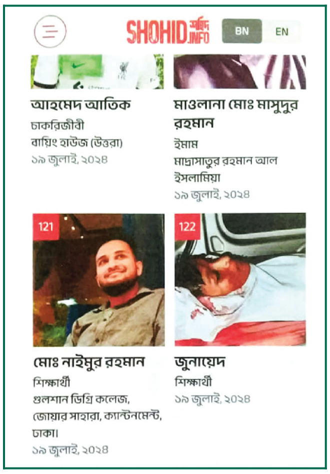

আহমেদ আতিক
চাকরিজীবী
বায়িং হাউজ (উত্তরা)
১৯ জুলাই, ২০২৪

মাওলানা মোঃ মাসুদুর রহমান
ইমাম
মাদ্রাসাতুর রহমান আল ইসলামিয়া
১৯ জুলাই, ২০২৪

মোঃ নাইমুর রহমান
শিক্ষার্থী
গুলশান ডিগ্রি কলেজ, জোয়ার সাহারা, ক্যান্টনমেন্ট, ঢাকা।
১৯ জুলাই, ২০২৪

জুনায়েদ
শিক্ষার্থী
১৯ জুলাই, ২০২৪

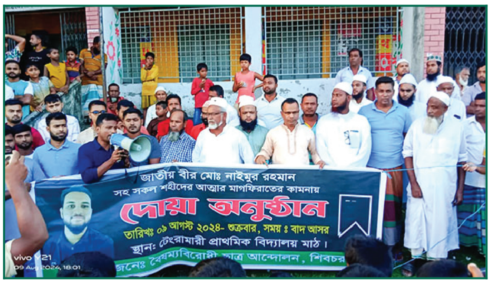
জাতীয় বীর মোঃ নাইমুর রহমান
সহ সকল শহীদের আত্মার মাগফিরাতের কামনায়
দোয়া অনুষ্ঠান
তারিখঃ ০৯ আগস্ট ২০২৪- শুক্রবার, সময় ঃ বাদ আসর
স্থানঃ টেংরামারী প্রাথমিক বিদ্যালয় মাঠ।
জনেঃ বৈষম্যবিরোধী ছাত্র আন্দোলন, শিবচর
vivo Y21
09 Aug 2024, 18:01

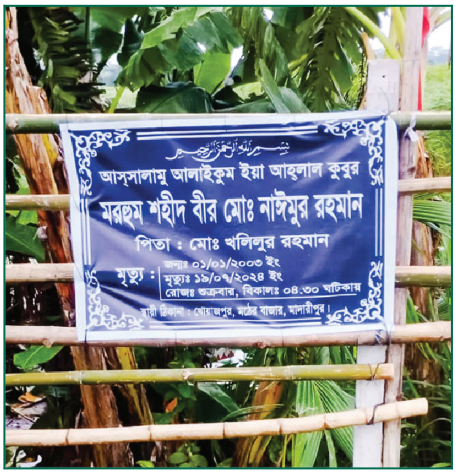
بسم الله الرحمن الرحيم
আস্সালামু আলাইকুম ইয়া আহ্লাল কুবুর
মরহুম শহীদ বীর মোঃ নাঈমুর রহমান
পিতা : মোঃ খলিলুর রহমান
জন্মঃ ০১/০১/২০০৩ ইং
মৃত্যু :
মৃত্যুঃ ১৯/০৭/২০২৪ ইং
রোজঃ শুক্রবার, বিকালঃ ০৪.৩০ ঘটিকায়
স্থায়ী ঠিকানা : খোয়াজপুর, মঠের বাজার, মাদারীপুর।